शिक्षा का पंचमुखी सिद्धांत: त्रि-मुखी प्रक्रिया से आगे का नया दृष्टिकोण

लेखक: वैभव महर्षि | **संस्थान:** तिलक बी.एड. कॉलेज | **ईमेल:** Maharshivaibhav@gmail.com

1. जॉन डीवी का त्रि-मुखी सिद्धांत व उसका विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी के त्रि-मुखी शिक्षा सिद्धांत (Teacher, Learner, Curriculum) की समीक्षा करता है। समकालीन युग में तकनीकी विकास, वैश्विक परिवर्तनों और छात्रों की मानसिक आवश्यकताओं को देखते हुए यह त्रि-मुखी मॉडल अब अपूर्ण प्रतीत होता है। पारंपरिक सिद्धांत में शिक्षा को केवल शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम के तीन सीमित भागों में ही विभाजित किया गया है।

यह शोध कार्य इस पारंपरिक मॉडल के तीन मूल तत्वों के साथ दो नए आयामों—'प्रयोग या जांच' तथा 'परिणाम या अनुभव' को जोड़ने पर आधारित है, जिससे यह 'पंचमुखी सिद्धांत' बनता है। यह नया सिद्धांत रटने की प्रवृत्ति को पूरी तरह त्यागकर व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष ज़ोर देता है। यह शोध जॉन डीवी के वर्षों पुराने सिद्धांत को विकसित कर वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता और प्रभावी शिक्षण पर बल देता है, जो भविष्य के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

2. त्रि-मुखी मॉडल की सीमाएं (Limitations)

जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा में तीन प्रमुख स्तंभ हैं: शिक्षक (जो ज्ञान देता है), शिक्षार्थी (जो ज्ञान ग्रहण करता है), और पाठ्यक्रम (जो माध्यम बनता है)। यह मॉडल पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित शिक्षा से आगे बढ़कर बाल-केंद्रित शिक्षा की ओर एक बड़ा कदम था, परंतु इसकी कुछ सीमाएं हैं:

- यह मॉडल शिक्षा की व्यापकता को सीमित करता है।
- यह इस बात को स्पष्ट नहीं करता कि ज्ञान को जीवन में कैसे उतारा जाए।
- यह रटने और परीक्षा पास करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।
- यह छात्रों में तार्किक या खोजबीन (Active Explorer) की प्रवृत्ति का विकास करने में असमर्थ रहा है।
- यह व्यक्ति के आंतरिक ज्ञान में वृद्धि करे, यह आवश्यक नहीं है।
- यह विद्यार्थी की रुचि के बारे में पूर्ण संज्ञान नहीं लेता।

- यह विद्यार्थियों को भविष्य की प्रेरणा और नवाचार नहीं देता।

3. शिक्षा का पंचमुखी सिद्धांत (The Five Pillars)

इस नए सिद्धांत के आधार पर शिक्षा को पांच मूल स्तंभों में विभाजित किया गया है:

1. शिक्षक (Teacher): आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका केवल जानकारी देने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं है, बल्कि एक मार्गदर्शक (Guide) की है, जो शिक्षार्थी की आंतरिक क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा देता है। सभी प्रकार के विद्यार्थियों की रुचि एक जैसी नहीं होती, इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को समझना तथा उसे भविष्य के लिए प्रेरित करने के लिए शिक्षक को अब नए आधारभूत ज्ञान की आवश्यकता होगी।

2. शिक्षार्थी (Learner): इस मॉडल में छात्र केवल कक्षा में बैठकर सुनने वाला एक निष्क्रिय श्रोता नहीं है। उसे शिक्षा का सक्रिय खोजकर्ता (Active Explorer) माना गया है, जो शिक्षक के द्वारा दिए गए संपूर्ण ज्ञान को ग्रहण कर स्वयं के उज्ज्वल भविष्य की खोज करता है। वह सभी प्रकार की अतिरिक्त गतिविधियों जैसे—नृत्य (Dance), गायन (Singing), नेतृत्व (Leadership), और स्वयंसेवा (Volunteer) में भाग लेकर अपने व्यक्तित्व को निखारता है।

3. पाठ्यक्रम (Curriculum): वर्तमान में रटने वाले और पुराने पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता समाप्त हो रही है। इस सिद्धांत के अनुसार पाठ्यक्रम लचीला (flexible), व्यावहारिक, और कौशल आधारित (skill-based) होना चाहिए जो जीवन की वास्तविक चुनौतियों के अनुकूल हो, जिससे भविष्य में आने वाली कठिनाइयों के लिए शिक्षार्थी को तैयार किया जा सके।

4. प्रयोग एवं जांच (Experimentation and Inquiry): जो प्रयोग या जांच किए जा चुके हैं, केवल वे ही हमारे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाते हैं। परंतु उन प्रयोगों का क्या जो भविष्य के लिए बाकी हैं? शिक्षा के सभी स्तरों पर हमें शिक्षार्थी को जांच और प्रयोगों के लिए मुक्त छोड़ना होगा तथा मार्गदर्शन करना होगा। पाठ्यक्रम व प्रयोग में अंतर नहीं होना चाहिए; प्रयोग पाठ्यक्रम से भिन्न किसी अन्य दिशा में भी किया जा सकता है (जैसे: सर आइजक न्यूटन)। हिंदी, अंग्रेजी या संस्कृत जैसे विषयों में भी प्रयोग लिखित या कार्य रूप में किए जा सकते हैं।

5. परिणाम व अनुभव (Result and Experience): शिक्षा का अंतिम उद्देश्य परीक्षा के अंक नहीं बल्कि जीवन का अनुभव है। प्रयोगों से जो परिणाम हमें प्राप्त होते हैं, वे छात्र को ठोस व्यावहारिक अनुभव देते हैं और यही अनुभव भविष्य में छात्र को एक अच्छा शिक्षक और बेहतर इंसान बनाने में मदद करता है। ये पांचों मूल अंतः-सम्बंधित (interconnected) हैं।

4. पंचमुखी सिद्धांत आवश्यक क्यों? (Why Five Pillars Theory is Necessary?)

शिक्षा का विकास एक असीमित काल तक चलने वाली प्रक्रिया है। भूतकाल में जो असंभव था, आज वह सत्य है। शिक्षा के त्रि-मुखी सिद्धांत से आगे बढ़कर अब विकसित होना होगा ताकि भविष्य इसे नए रूप में पढ़ और समझ सके। भविष्य के नवाचार के लिए पंचमुखी सिद्धांत आवश्यक है।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

- पंचमुखी सिद्धांत शिक्षा की असीमितता को परिभाषित करता है।
- यह पाठ्यक्रम को प्रयोग व परिणाम के भिन्न रूप में प्रदर्शित करता है।
- यह प्रयोग व परिणाम के वास्तविक जीवन की चुनौतियों पर प्रकाश डालता. है।
- यह शिक्षा जगत को खोज की राह में सम्मिलित करने के लिए प्रेरित करता है।
- यह शिक्षा को और अधिक रुचिकर और बाल-केंद्रित बनाता है।
- यह शिक्षक और बालक के बीच एक मजबूत समन्वय स्थापित करता है।

References / सन्दर्भ

- Dewey, J. (1916). *Democracy and Education*: *An introduction to the philosophy of education*. Macmillan.
- Dewey, J. (1938). *Experience and Education*. Kappa Delta Pi.
- Dewey, J. (1897). *My Pedagogic Creed*. E. L. Kellogg & Co.
- National Education Policy (NEP) Guidelines & Documents.
- Educational Research Portals via Google.com Data Resources.